प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधिः पहले उक्त लिंक पर जाएं फिर क्लिक करें e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ | अंक- ८९ | भोपाल, ११ अक्टूबर, डाक १२ अक्टूबर २०२५ | भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित | पृष्ठ -८ | मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

कृत्रिम मेधा विकास की राह है मगर। खतरों से खाली नहीं है ये नई डगर।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२९५

कैलाश आदमी

वैज्ञानिक कृत्रिम बुद्धि या मेधा को जादू की छड़ी निरूपित करते हुए बाल-किशोर व युवा पीढ़ी को नित्य नूतन विधियों से आकर्षित कर रहे हैं। कृत्रिम मेधा के कारण विशेषकर निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर कम किए जा रहे हैं जिससे देश की आर्थिक समृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। इसका सरकारी सेवाओं पर भी असर पड़ा है और विशेषकर बैंकों में रोजगार के अवसर कम हुए हैं।

देश के उच्च शिक्षा संस्थानों में कृत्रिम मेधा शिक्षा का अभिन्न अंग बन चुकी है। एक सर्वेक्षण के अनुसार ८५ प्रतिशत से अधिक छात्र शिक्षक की तुलना में कृत्रिम मेधा को अधिक प्रभावी मान रहे हैं। भारत की तुलना में अमेरिका और चीन में इसका प्रभाव कुछ ज्यादा ही दिखाई दे रहा है।

भारत के लगभग ७० हजार संस्थानों और ४.४ करोड़ छात्रों में कृत्रिम मेधा का उपयोग हो रहा है तथा इसके उपयोग में निरंतर वृद्धि दिखाई दे रही है। ८५.४ प्रतिशत कृत्रिम मेधा उपयोगकर्ता छात्रों के अनुसार कृत्रिम मेधा उपकरण पारंपरिक शिक्षक से ज्यादा प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं। ३८ प्रतिशत छात्रों ने अब पढ़ाई में शिक्षक (ट्यूटर) की मदद लेना बंद कर दिया है। ७२ प्रतिशत छात्रों का कहना है कि कृत्रिम मेधा से सीखने की प्रवृत्ति और शैक्षिक अवसर बेहतर हुए हैं। कृत्रिम मेधा का उपयोग शोध, भाषा सुधार और कैरियर योजना निर्माण हेतु किया जा रहा है। वैसे आधे से अधिक शिक्षक अब छात्रों को स्वयं कृत्रिम मेधा का जिम्मेदारी और सटीक आलोचनात्मक सोच के साथ उसका उपयोग करना भी सीखा रहे हैं। वैसे शिक्षकों में संकाय के १७ प्रतिशत सदस्य ही विशेषज्ञ कहे जा सकते हैं। ४५ प्रतिशत शिक्षकों ने प्रशिक्षण संस्थानों की कमी के कारण कृत्रिम मेधा सीखने की प्रक्रिया को कठिन बताया।

वैश्विक नियोजक व लेखक श्री रुचिर शर्मा के अनुसार अमेरिका में वहां की अर्थव्यवस्था के लिए बढ़ते खतरों के बावजूद उसकी बड़ी कंपनियां और निवेशक कृत्रिम मेधा के कारण बेफिक्र दिख रहे हैं।

वैसे अमेरिका द्वारा दुनिया के अन्यान देशों पर करों का जो दुगुना-तिगुना और कहीं-कहीं चौगुना बोझ डाला गया है उससे कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में चुनौतियां भी बड़ी है किंतु श्री रुचिर शर्मा जैसे विद्वान का कहना है कि कृत्रिम मेधा में इतनी ताकत है कि यह सभी चुनौतियों का सामना कर सकती है। अगर कृत्रिम मेधा को लेकर इतना उत्साह ना हो तो अमेरिकी अर्थव्यवस्था ठप हो सकती है। ना केवल भारत बल्कि अमेरिका व चीन में कृत्रिम मेधा के कारण आई श्रमबल में गिरावट चिंता का विषय है किंतु संभावित जोखिम के प्रति प्रतिक्रिया धीरे-धीरे कमजोर होती दिखाई देती है। चीन के बाल-किशोर और युवा कृत्रिम मेधा से घटते रोजगार से अवसरों के प्रति चिंतित दिखाई देते हैं किंतु सत्तारूढ़ साम्यवादी दल की ओर से दावा किया जा रहा है कि ९८ प्रतिशत समस्याओं पर काबू पा लिया गया है। चीन के एक गांव में जहां दल का एक मंजिला दफ्तर है उस गांव में १५ हजार लोग रहते हैं। वहां कृत्रिम मेधा कोई समस्या ना होकर ड्रग एडिक्ट की संख्या बढ़ना ज्यादा चिंता में डालता है। शेढोंग प्रांत की शियाजीन काउंटी में ६३ हजार समस्याएं दर्ज हुईं किंतु काउंटी में ९९ प्रतिशत संतुष्टि दर का दावा किया। पार्टी नेताओं का यह प्रयास रहता है कि छोटी समस्याएं गांव के बाहर ना जाएं और बड़ी समस्याओं का निदान भी शहर में ही हो जाए अर्थात हर स्तर पर समस्याओं के स्थानीय समाधान पर जोर दिया जा रहा है। यह हाईटेक मॉडल पूरे देश में लागू किया जा रहा है और इसके अंतर्गत हर नागरिक पर नए साधन (टूल्स) नजर रख रहे हैं तथा नजर रखने वाले हर गली तक पार्टी की मौजूदगी दर्शाते हैं। पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू हुई इस योजना को २० साल पूरे हो गए हैं तथा इसके अंतर्गत देश को १० लाख ग्रिडों में बांटकर हर ग्रिड में १ हजार लोग रखे गए हैं तथा हर ग्रिड में २ अटेंडेंट (सेवक)नियुक्त हैं। शहरों में ग्रिड सेवक को सर्विलांस कैमरों तथा सेंसर की मदद मिलती है और ये सेंसरनुमा एप सुदूर गांव से लेकर शहरी व भीड़भाड़ वाले कस्बों की भी जानकारी देते हैं।

भारत में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने गत बुधवार को नई दिल्ली में इंडिया मोबाइल कांग्रेस २०२५ का उद्घाटन किया। यह आयोजन ११ अक्टूबर तक चलेगा। इसका विषय है नवाचार से बदलाव (इनोवेशन टू ट्रांसफारमेशन)। श्री मोदी ने कहा कि भारत ने डेटा की कीमत १ जीबी डेटा के भाव तुल्य कर दी है अर्थात इसका भाव चाय के एक कप से भी कम हो गया है। २०१४ के बाद इलेक्ट्रानिक्स उत्पादन ६ गुना और चलभाष निर्माण २८ गुना बढ़ने का दावा श्री मोदी ने किया तथा कहा कि यह आत्मनिर्भर भारत का उदाहरण है। जिसके अंतर्गत भारत अब सिर्फ तकनीक का उपयोगकर्ता नहीं बल्कि नवाचार में अग्रणी बनने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने दूर संचार मंत्री जिन्होंने दूर संचार का नक्शा (रोडमेप) प्रस्तुत किया कि भी प्रशंसा की। कार्यक्रम के दौरान हजारों विद्वान उपस्थित थे जिनमें कुर्ता-पैजामाधारी मोदी जैसे बिरले जबकि ९९वें प्रतिशत से अधिक सूट-बूट-ट्राईधारी दिखाई दिए। श्री मोदी स्वयं लाखों की कीमत वाला खादी का सूट पहने दिखाई दिए।

भारत में पहली बार सेटेलाइट इंटरनेट सेवा के साथ डिजिटल पहुंच की नई लहर तैयार हो रही है। सीधे उपग्रहों से जुड़े इस ब्राडबेंड नेटवर्क से देश के दूर दराज देहात और पहाड़ी क्षेत्रों तक तेज इंटरनेट पहुंच की दिशा में काम हो रहा है तथा इंटरनेट डेटा सीधे उपग्रहों के माध्यम से भेजे और प्राप्त किए जा रहे हैं जिससे नए विकसित भारत की उम्मीद की जा सकती है किंतु बढ़ती बेरोजगारी और घटते रोजगार अवसर बाल-किशोर-युवा चिंताओं को बढ़ाते हैं।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

कृत्रिम मेधा विकास की राह है मगर।
खतरों से खाली नहीं है ये नई डगर।।

मीरा-राधा का प्रेम साधन नहीं, परमात्मा का स्वरूप है

सरिता गर्ग 'सरि'

यह अनुभूतिपरक कहानी समर्पित है उन सभी आत्माओं को —

जो भक्ति के मार्ग पर चलकर प्रेम के सागर में डूब जाती हैं और अपने भीतर ही परमात्मा का साक्षात्कार करती हैं। उन्हें — जो राधा बनकर समर्पित होती हैं,मीरा बनकर तल्लीन,और अंततः स्वयं 'मैं' को मिटाकर 'वह' बन जाती हैं।

जब हृदय का सागर स्थिर हो जाता है और विचारों की तरंगें मौन में विलीन होती हैं,तब भीतर कोई स्वर गूंजता है —वही अनहद नाद, जो आत्मा को उसके स्त्रोत से जोड़ देता है।

यह कथा उसी नाद की है —जहाँ प्रेम, भक्ति और साधना एक हो जाते हैं। जहाँ राधा का समर्पण, मीरा की तन्मयता और एक साधिका की आंतरिक यात्रा मिलकर एक अद्वितीय अनुभव बन जाते हैं। यह केवल एक स्त्री की कथा नहीं —

यह हर उस आत्मा की यात्रा है, जो अपने कान्हा को मंदिरों में नहीं, अपने भीतर खोजती है। प्रेम जब भक्ति में रूपांतरित होता है,और भक्ति जब अस्तित्व में विलीन हो जाती है तभी आत्मा परम सत्य का स्पर्श करती है।

वह अमृत की बूंदों सा उसके मन की धरती पर बरसा और वह सौंधी मिट्टी सी महक उठी। वह इंद्रधनुष बनकर उसके वजूद पर छा गया और उसके तन-मन से खुशियों के रंग बिखरने लगे। दूर से बजती बांसुरी की मादक धुन उसके कानों में रस घोलती हुई पास आती गई। सांसों की सरगम पर उसका पोर-पोर नर्तन करने लगा। भावलोक में विचरण करती वह निधिवन का एक पेड़ बन गई।

चारों ओर मौन था, भीतर बहती असीम गहराई और तभी कान्हा के आलिंगन से धड़कनों की जलतरंग बज उठी। रोम-रोम पुलकित हो गया, चेतना प्रकाश से भर गई।

सम्मोहन से बंधी निधिवन की नीरवता किसी अद्भुत प्रकाश से भर उठी थी। आनंदसागर में तैरता मन, संसार के सागरों को पार कर, परम ब्रह्म की ओर अग्रसर था। यह सात्विक प्रेम की पराकाष्ठा थी, जब आत्मा में केवल अनहद नाद बजता है।

चित्त जब शरीर के नौ द्वारों को पार कर दसवें द्वार तक पहुँचा —तब उसने सुना वह नाद, जो भीतर की हलचल की ध्वनि है। वह उसी में निमग्न थी,कभी राधा, कभी सुध-बुध भूली मीरा। न कोई विकलता थी, न आतुरता —बस नीरवता, असीम शांति और प्रभु का सामीप्य। वह प्रभु से एकाकार होकर परम ब्रह्म में विलीन हो चुकी थी। यह कैसा स्वप्न था? वह उनींदी सी उठी। भोर की लालिमा सुनहरी रंगत समेटे पहाड़ियों से झांक रही थी।

नित्यक्रिया से निवृत्त होकर, स्नान के बाद उसने लड्डू गोपाल को नहलाया,नए वस्त्र पहनाए, श्रृंगार किया, भोग लगाया। आज जन्माष्टमी थी- वह कृष्ण की सच्ची साधिका थी। उसने सोचा-हृदय की दीवार पर तो कान्हा अंकित हैं ही,क्यों न आज उनकी छवि कैनवास पर उतार दूँ? वह रंगों से खेलने लगी- श्यामल तन, पीताम्बर, मोर मुकुट, वैजयंती माला, अधरों पर मुरली, आँखों में चंचलता। धीरे-धीरे कैनवास पर कान्हा साकार हो उठे। वह उन्हें निहारती रही। मन ने चाहा, उनकी बगल में राधा बनकर खड़ी हो जाए। तूलिका उठाई, पर चित्र में राधा नहीं,

जोगन के वेश में मीरा उभर आई-
इकतारा थामे, प्रभु चरणों में बैठी।

वह मुस्कुराई- हाँ, मैं मीरा ही तो हूँ, संसार से टक्कर लेती, मंदिरों और अरण्यों में भटकती, विष को अमृत मान पीने वाली मीरा। जिसकी आत्मा कृष्णमय थी- जिसे मृत्यु का भय नहीं, बस गिरधर का नाम। चित्र पूरा हुआ। अगरबत्ती की सुगंध में उसे निधिवन की वही बयार महसूस हुई। दीपक की लौ लहराई, चित्र में झिलमिलाहट सी फैली।

मुरली का छोर चमक उठा, और मीरा की आँखें सजीव हो गईं। कान्हा उसके होंठों से धीमी पुकार निकली। वही अनहद नाद फिर भीतर गूंजा। क्षणभर को वह देह से परे थी - राधा, मीरा और वह-तीनों एक चेतना में विलीन। जब लौ स्थिर हुई, चित्र शांत था -पर अब उसमें एक तीसरी आकृति थी,पारदर्शी, दिव्य- उसकी अपनी।वह मुस्कुराई - तो यही था संकेत मीरा भी मैं, राधा भी मैं,और तू- सदा मेरे भीतर। बाहर मंदिर की घंटियाँ गूँज उठीं जन्माष्टमी का उत्सव आरंभ था। उसने दीप चित्र के पास रख दिया। अब वह जान चुकी थी -भक्ति कर्म नहीं, अनुभूति है; प्रेम साधन नहीं, परमात्मा का स्वरूप है। अब फिर वही भोर थी, वही गुनगुनी धूप -पर अब वह स्वयं प्रकाश बन चुकी थी-कृष्णमय, मीरा सी, राधा सी,पूर्ण और शांत।

-भिवाड़ी

एक दिवसीय उपवास/अनशन आज

दो दिवसीय आवासी संपूर्ण चिकित्सा शिविर का आज गांधी भवन में शुभारंभ

निर्दलीय संवाद

भोपाल। विश्व गुरु भारत फाउंडेशन (न्यास) द्वारा निरोग भारत अभियान के अंतर्गत ११-१२ अक्टूबर को श्यामला पहाड़ी स्थित गांधी भवन में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसे दो दिवसीय डिटॉक्स लीवर क्लींजिंग शिविर के रूप में प्रचाअिरत किया गया है।

उक्त जानकारी फाउंडेशन के संयोजक श्री गोविंददास भूतड़ा ने निर्दलीय प्रकाशन को दी। उन्होंने बताया कि शिविर गांधी भवन के मोहनिया सभाकक्ष में ११ अक्टूबर शनिवार को सुबह १० बजे आरंभ होकर सायंकाल ५ बजे तक चलेगाअगले दिन भी शिविरार्थी शिविर में रहकर स्वास्थ्य लाभ ले सकेंगे। इस हेतु सैकड़ों की संख्या में लोगों ने पंजीयन कराया है तथा शिविर आरंभ होने के पूर्व भी पंजीयन कराया जा सकता है। समर्थजन इस अभियान हेतु दान देकर आयकर की धारा ८०जी के अंतर्गत ५० प्रतिशत छूट का लाभ ले सकते हैं।

श्री भूतड़ा ने बताया कि फाउंडेशन के राष्ट्रीय सचिव डॉ. सच्चिदानंद शांडिल्य, दवामुक्त जीवन मिशन मुंबई के संतोष गुरुजी, प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. श्याम सुंदर गुप्ता, आयुर्वेद-एलोपैथिक समन्वित चिकित्सक डॉ. नरेंद्र जैन, भारतीय वनसेवा अधिकारी रहे डॉ. रामगोपाल सोनी, एक्युप्रेसर विशेषज्ञ डॉ. शकुंतला पांडा (दिल्ली) तथा निरोग भारत अभियान मध्यप्रदेश से जुड़े चिकित्सकों में डॉ. पूर्णिमा दाते (रसाहार), डॉ. हेमंत शुकलीकर (प्राकृतिक चिकि.), डॉ. रचना पांडे (एलोपैथ), प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. सपना गुप्ता (इंदौर), होमोपैथ डॉ. ऋषि सागर (जबलपुर) और प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. केएल रंगवानी शिविरार्थियों को स्वास्थ्य क्रांति के अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास पद्धतियों से जोड़कर लाभान्वित करेंगे।